

R-P - 25(a)

ACADEMIA : GMGC

ISSN - 2348-7054

An International Multi-disciplinary Refereed
Academic Journal of
Gokhale Memorial Girls' College
Volume 4, 2017

Editor

Dr. Atashi Kapha

Principal



Gokhale Memorial Girls' College
1/1 Harish Mukherjee Road, Kolkata - 700 020



ACADEMIA: GMGC

An International Multi-disciplinary
Refereed Academic Journal of
Gokhale Memorial Girls' College

Volume 4, 2017



र
रि
री
ने
के
भी
सेल
पर्य
कई
इसमें

SREEYA GHOSH
TABULATION OF THE EVOLUTION PATTERNS OF 2-
CELLED HYBRID BOOLEAN CELLULAR AUTOMATA
HAVING AT MOST ONE ACTIVE CELL | 135

DR. SOUMYADITYA SUTRADHAR, MS. PAPIYA SAHA
AND DR. SUKHEN DAS
NANOSCIENCE AND NANOTECHNOLOGY AN
EMERGING FIELD OF SCIENCE: AN OVERVIEW | 142

लक्ष्मी पाण्डेय
आधुनिकता-उत्तर आधुनिकता | 150

डॉ. कुलदीप कौर
फरीद वाणी में नैतिक चेतना | 157

डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी
हिंदी साहित्य में पर्वों के रंग | 162

डॉ. पलाशी बिस्वास
नया सिनेमा में सामाजिक परिदृश्य | 168

SUMALLYA MUKHOPADHYAY
ANXIETY FOR THE 'SORROWS OF YOUR CHANGING
FACE': A CRITICAL DISCOURSE OF SHAKESPEARE
SONNETS | 176

SUBHAM DUTTA
'DOUBLE-DOUBLE TOIL AND TROUBLE': PAINFUL
DOUBLENESS AND A SEARCH FOR
EPISTEMOLOGICAL CERTITUDE IN
YEATS' LETTERS | 183

OEISIKEE BASUMULLICK
ETHICAL AND PRACTICAL CONCERNS OF "NUDGE" IN
MARKETING PRACTICES | 183



आधुनिकता-उत्तर आधुनिकता

अर्थ तथा रचना की दृष्टि से उत्तर आधुनिकता पद अशुद्ध और अनुचित अर्थात् गलत प्रतीत होता है। आधुनिकता शब्द एक विशेषण है। जो विशेषण की विशेषता बताए वह प्रविशेषण होता है। यहाँ आधुनिकता के आगे 'उत्तर' शब्द को प्रविशेषण की तरह प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि 'आधुनिकता' एक नित्य, निरंतर, वर्तमान रहने वाला शब्द है इसका अर्थ परिवर्तित होता रहेगा। होता रहना है किन्तु इसका अवसान या समापन नहीं हो सकता। जैसे हम कहेंगे कि पूर्व में यानि पहले आधुनिकता के मायने यह थे, वर्तमान में यह हैं और भविष्य में कुछ और होंगे। कबीर ने जब जाति-पाँति को लताड़ते हुए ईश्वर के एक और सर्वव्यापक होने की बात कही तो वे अपने काल के आधुनिक दृष्टि सम्पन्न कवि थे, वे आज भी प्रासंगिक हैं। उत्तर आधुनिकता कहने पर हमें इसका अवसान भी दिखाना होगा या कहना पड़ेगा कि आधुनिकता समाप्त हो गई ...। यह हो नहीं सकता। हर काल की अपनी जीवन दृष्टि और मूल्य होते हैं। यह अच्छे या बुरे हो सकते हैं। इसी आधार पर आधुनिकता के सुरुप (सुन्दर), विरुप या कुरूप होने की बात की जा सकती है। 'आधुनिकता' कुछ विशेषताओं जो युगानुकूल हों, से सन्पन्न जीवन दृष्टि है। प्रवृत्ति है। शैली है। इसलिए जब बाह्य संस्कृतियों का, सत्यताओं का आक्रमक प्रभाव पड़ता है। जब बिज्ञान और तकनीकी की क्रांति होती है तब इनसे प्रभावित समाज की आवश्यकताएँ, महत्वाकांक्षाएँ, दिशा और लक्ष्य परिवर्तित होते हैं तब 'आधुनिकता' यानि आज जो है उस जीवन शैली और जीवन मूल्यों के आधार पर परिवर्तित अर्थ प्रकट करने लगती है। यह परिवर्तन चक्र सदैव चलता रहेगा लेकिन सदैव अपनी परिवर्तित विशेषताओं के साथ यह 'आधुनिक' ही रहेगा। इसे 'उत्तर आधुनिक' नहीं कहा जा सकता।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान-दुर्गाकुण्ड वाराणसी की पत्रिका 'नया मानदण्ड' (अक्टूबर १९९६ - मार्च १९९७) अंक ६-७ संयुक्तांक 'उत्तर आधुनिकता विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ था जिसकी संपादक कुसुम चतुर्वेदी थी। इसमें देश के नामचीन लेखकों, समीक्षकों, पत्रकारों, साहित्यकारों ने उत्तर आधुनिकता को परिभाषित किया, इसकी विशेषताएँ और पर्यायवाची नाम बताए। मैं सामान्य पाठक और शोधार्थी हूँ अपने नैतिक स्तर के अनुरूप उस पंक्ति को खोजती रही जिसमें किसी ने इस पद 'उत्तर आधुनिकता' को ही गलत कहा है। किन्तु पूरी पत्रिका में ऐसी पंक्ति नहीं मिली। हाँ, अनेक मत-मतान्तरों से अवगत हुई। गिरीश्वर मिश्र ने 'आधुनिकता की परिणति' लिख कर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है तथा लिखते हैं - "कुछ लोगों के लिए यह आधुनिकता का उत्कर्ष है तो वहीं कुछ लोग इसे आधुनिकता का दौर का अवसान भी मान रहे हैं। उत्तर आधुनिक लेखक मुक्त पाठ रचता है .. वह एक नहीं, कई अर्थों को विकसित करता है। उसे पढ़ते समय हर बार नया अर्थ मिलता है। इस नई दृष्टि में संस्कृति का तात्पर्य और प्रयोजन केन्द्रिय है। अस्पष्टता और खुरदुरे सत्य जिसमें एक ही आवाज नहीं है बल्कि कई आवाजे हैं आकर्षक भी हैं विकर्षक भी। सत्य और यथार्थ का इकहरा रूप सीधा है पर उसमें